International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(II), April - June, 2021, pp.97-100

शास्त्रीय संगीत का बदलता स्वरूप : तबला के सन्दर्भ में

डॉ. विजय सिद्ध*

प्रस्तावना

आधुनिकीकरण के प्रभाव से वर्तमान युग में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। संगीत एवं तबला के क्षेत्र में प्रतिदिन सृजनात्मकता एवं संवर्धनात्मकता के नवीन अध्याय जुड़ रहे हैं, जैसे गायकों वादकों की रूढ़िवादी विचारधारा का विलुप्त होना, मिश्रित घराना पद्धति का प्रार्दुभाव होना, सैद्धांतिक ज्ञान में वृद्धि, कलाकरों का सामाजिक उन्नयन, विद्यालयी एवं महाविद्यालयी शिक्षा के प्रति आकर्षण, प्रस्तुतिकरण, ध्वनि तकनीक, सोशियल मीडिया आदि। मध्य युग में तबला–वादन की शिक्षा प्राप्त करना अत्यन्त जटिल कार्य था। परम्परावादी तबला–वादक सामान्यतः अपने पुत्रों अथवा वंशजों को ही तबले की शिक्षा प्रदान करते थे। अधिक से अधिक किसी खास या विशेष प्रतिभाशाली विद्यार्थी को, जो कि वर्षों तक उस्ताद के घर रह कर पूर्ण समर्पण भाव से सेवा करता था, उसे उस्ताद अथवा गुरू के घर का छोटा–मोटा कार्य तक करना होता था, फिर भी उन्हें गुरू के पुत्रों अथवा वंशजो के समान शिक्षा प्राप्त नहीं होती थी। उन्हें इस बात का भय रहता था कि कहीं शिष्य पुत्रों से श्रेष्ठ न बजाने लग जाये, दूसरों को सिखा देंगे तो अपने बच्चे क्या करेंगे।

किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस विचारधारा में परिवर्तन आया है। इस युग के गुरू अथवा उस्ताद पहले की अपेक्षा उदार हुए हैं। उन्होंने परम्परागत शिक्षण व्यवस्था को सरल स्वरूप प्रदान किया है। आज कई गुरूओं ने निजी स्तर पर शिक्षण संस्थायें खोलकर एक सामान्य विद्याार्थी को तबला शिक्षा प्रदान करनं का सुलभ अवसर प्रदान किया है। उसमें वे सामान्य संगीत शिक्षण संस्थाओं की भॉति अनेक विषयों की शिक्षा नहीं देते अपितु केवल तबला–वादन की ही शिक्षा देते हैं और वह भी स्वयं। पंडित ज्ञान प्रकाश घोष, उस्ताद अल्ला रख्खा, पंडित श्यामल बोस, विदुषी अनुराधा पाल, पंडित सुरेश तलवलकर जैसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। एक और मौलिक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ है कि गुरू अथवा उस्ताद अब पूर्व की अपेक्षा बिना किसी भेदभाव से तबला शिक्षा प्रदान करने लगे हैं। उन्होंने संकीर्ण मानसिकता का परित्याग किया है। परम्परावादी तबला–वादक अपनी कला के रहस्य पूर्व में स्वयं या अपने वशंजों तक ही सीमित रखते थे, किन्तु अब वे अपनी कला के रहस्य यदि कोई प्रतिभाशाली विद्यार्थी है तो उसे बताने में कोई संकोच नहीं करते हैं।

किन्तु बीसवीं शताब्दी में जब से विद्यालय एवं महाविद्यालयों में तबला विषय प्रारम्भ हुआ तबसे न केवल अभिभावकों ने अपने बच्चों को तबला प्रशिक्षण प्रदान कराना प्रारम्भ किया अपितु परम्परावादी तबला वादकों ने भी अपने बच्चों को विद्यालयी एवं महाविद्यालयी शिक्षा प्रदान कराना श्रेयष्कर समझना प्रारम्भ किया। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि यदि हम अपने बच्चों को स्कूल–कॉलेज नहीं भेजेंगे तो वे जमाने की दोड़ में पिछड़ जायेंगे। और वर्तमान में तो परम्परावादी तबला वादकों ने अपने बच्चों को तबला प्रशिक्षण के लिये भी स्कूल–कॉलेज भेजना श्रेयष्कर समझना प्रारम्भ कर दिया है। आज प्रायः परम्परावादी तबला वादकों यह कहते सुना जाता है कि हमारे पास भी डिग्री या डिप्लोमा होता तो हम भी कहीं नौकरी कर रहे होते अथवा कहीं टीचर अथवा लेक्चरर होते या अन्य किसी उच्च पद पर आसीन होते।

आधुनिक तबला–वादकों में अग्रणी समझे जाने वाले तबला वादक पंडित शंकर घोष के शब्दों में ''घरानेदार तबला वादक विद्यालयी एवं महाविद्यालयी शिक्षा को अनावयश्क समय नष्ट करने वाला कारक समझते

* सहायक आचार्य, तबला, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर, राजस्थान।

थे, इसी कारण वे जमाने की रफ्तार से पिछड़ गये और संगीत की दुनिया में अपना वह स्थान नहीं बना सके जो अन्य गायकों वादकों ने बनाया।'' अतः परम्परावादी तबला वादक केवल तबला शिक्षा को ही सर्वाधिक महत्व देते थे। किन्तु वर्तमान में प्रायः तबला–वादक ही नहीं अपितु प्रत्येक संगीतज्ञ अपने बच्चों एवं शिष्यों को संगीत की शिक्षा के साथ साथ स्कूल एवं कॉलेज शिक्षा ग्रहण करने के लिये प्रेरित करते हैं।

सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अफाक हुसैन जो परम्परागत घराना एवं उस्ताद–शागिर्द परम्परा के कट्टर अनुयायी थे, ने जेम्स किपन द्वारा लिखी पुस्तक तबला ऑफ लखनऊ में यह स्वीकार किय है कि मैंने बचपन का अमूल्य समय विद्यालय जाने की अपेक्षा रियाज़ में ही व्यतीत किया। किन्तु अब मेरे विचार बदल गये है। और मैं अपने बच्चों का निश्चय ही शिक्षा से वंचित नहीं रखूँगा जिससे वे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पिछड़ न जायें।''

अठारवीं शताब्दी तक तबला वादकों को मीरासी, तबलिया, तबलची जैसे शब्दों से सम्बोधित किया जाता था। जिसका कारण तबला का वेश्य समुदाय से जुड़ा होना था। तबला वादकों को वह सम्मान नहीं था जो अन्य गायकों या वादकों को था। उन्हें एक प्रतिष्ठित नागरिक की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी तक महिलाओं के तबला शिक्षण की तो कल्पना ही नहीं की जाती थी। यहाँ तक कि पुरूषों को प्रशिक्षण हेतु भेजने में भी अभिभावकों को यह भय रहता था कि कहीं वे कहीं कुपथगामी नहीं बन जायें।

वर्तमान युग में तबला वादकों को न केवल सामाजिक क्षेत्र में अपितु संगीत के क्षेत्र में भी एक प्रतिष्ठित नागरिक की दृष्टि से देखा जाने लगा है। लगभग पचास वर्ष पूर्व तबला वादकों को द्वितीय श्रेणी का कलाकार समझा जाता था और उन्हें संगतकार के अतिरिक्त किसी भी प्रकार का महत्व नहीं दिया जाता था। वर्तमान युग के तबला वादकों ने निश्चित रूप से इस अपकीर्ति को धो डालने का भागीरथ प्रयास किया है। निश्चित रूप से यह शिक्षा, वादन में विविधता एवं नवीन तकनीक द्वारा ही सम्भव हुआ है।

एक साक्षात्कार में स्वयं पंडित जसराज ने दूरदर्शन पर एक साक्षात्कार में यह स्वीकार किया कि ''मैं पहले अपने बड़े भाई पंडित मणिराम जी के साथ तबला बजाता था। जालन्धर शहर में आयोजित एक समारोह में उनके साथ में तबला बजाने गया तो मुझे स्टेज से तीन फुट नीचे बैठाया गया। मुझे इस बात से इतना आघात पहुँचा कि मैंने तबला बजाना छोड़ कर गाना प्रारम्भ कर दिया।''

वर्तमान युग के सुप्रसिद्ध तबला–वादक उस्ताद जाकिर हुसैन ने भी अपने एक साक्षात्कार में यह स्वीकार किया कि ''शुरू शुरू की बात है जब मैंने तबला बजाना प्रारम्भ ही किया था तो मैंने एक संगीत समारोह में कार्यक्रम के पश्चात् देखा कि प्रमुख कलाकार प्रशंसकों से घिरा हुआ था और में किचिन में खाना खा रहा होता था।''

किन्तु वर्तमान युग में तबला–वादकों को भी वह स्थान प्राप्त हो गया है जो अन्य संगीतज्ञों को है। आज उन्हें भी सम्मान जनक पारिश्रमिक प्राप्त होता है, आज संगीत सम्मेलनों में उसका नाम भी बराबर से लिखा जाता है। यही नहीं आज संगीत समारोहों में जन मानस तबला–वादक को भी सुनने आता है, आज यह किसी भी कार्यक्रम में यह कहते हुए सुना जा सकता है कि तबले पर कौन आ रहा है। उसे सुनने भी श्रोता आते हैं। आज श्रोता, आयोजक, मुख्य कलाकर तबला–वादक को संगतकार न मानकर बराबर का कलाकार मानने लगा है। अब यह स्वीकार किया जाने लगा है कि कार्यक्रम की सफलता में तबला वादक का भी उतना ही योगदान होता है।

तबला वादन में शास्त्रीय दृष्टिकोण से एक नये युग का सूत्रपात हुआ है वह है मिश्रित घराना शैली। आज की पीढ़ी का लगभग प्रत्येक तबला वादक अपने घराने के अतिरिक्त अन्य घरानों का तबला वादन करना गौरव समझता है। इसके दो प्रमुख कारण हैं–एक तो युग की माँग दूसरा इस वाद्य का संगत के रूप में अधिक प्रभावी होना। इससे न केवल प्रस्तुति में विविधता उत्पन्न होती है अपितु तबला वादक की संगत करने की क्षमता में भी वृद्धि होती है।

पूर्व की भाँति संगीत केवल राजदरबारों तक ही सीमित नहीं रहा और न ही तबला–वादकों को सीमित कलाकारों के साथ संगति करनी होती है। अब संगीत विश्वव्यापि हो चुका है। नयी पीढ़ी के तबला वादकों का मानना है कि अब जमाना बदल गया है उन्हें संगीत की विभिन्न विधाओं के भिन्न–भिन्न कलाकारों के साथ तबला–वादन करना होता है, किसी एक घराने का तबला–वादन करने से काम नहीं चलता। प्रसिद्ध तबला–वादक उस्ताद शफात अहमद खॉ का मत था कि ''यदि दिल्ली घराने के तबला वादक के हाथ में पूरब अंग नहीं है तो वह नृत्य के साथ कुशलतापूर्वक संगत नहीं कर सकता। मेरा सम्बन्ध मूलतः दिल्ली घराने से है लेकिन आवश्यकता पड़ने पर पूरब अंग का तबला भी बजाता हूँ। इसी कारण मैं नृत्य के साथ आसानी से संगत कर सकता हूँ।''

तबला की संगत के साथ बढ़ती उपयोगिता के कारण अन्य घरानों की रचनाओं के बजाने का कारण तबला वादन में विविधता उत्पन्न करना भी है। इसका समर्थन करते हुए इस सदी के शीर्षस्थ तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन का कहना है ''कि मेरे दिमाग में ऐसा बोझ नहीं रहता कि मैं पंजाब घराने का हूँ तो बाहर का न बजाउँ। इससे मेरे तबले में वेरायटी मिलती है। मैं हर जगह से अच्छी से अच्छी चीजें लेने की कोशिश करता हूँ। यह सही है कि हर घराने में सीखने के लिये बहुत कुछ है पर यह बहुत एक तरह का सीखना होगा जैसे 50 कुर्ते पजामें महज सफेद रंग के हों, मैं रंगों में वेरायटी पंसद करता हूँ।''

कोलकाता के प्रसिद्ध तबला–वादक पंडित कुमार बोस का मत है कि "I belong to the Benaras Gharana but I take material from all sources. One should not be limited or narrow minded. We are a new generation of musicians. We are more educated and sophisticated than our forefathers. Therefore we should show that we have knowledge of (the old masters of the various gharanas) and can incorporate everything in our playing."

इस सन्दर्भ में तबला विद्वान प्रोफेसर गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव का मत है कि ''पहले संगीत का क्षेत्र अत्यन्त सीमित था, केवल अपने घराने तक ही केन्द्रित था। अब तबला–वादक को सबके साथ बजाना पड़ता है और इसी कारण उस्ताद करामतुल्ला खाँ, पंडित सामता प्रसाद, उस्ताद जाकिर हुसैन ने दूसरे घरानों की चीजें बजायीं, बजानी पड़ेगी। एक कुशल तबला–वादक को जनरल मर्चेंट की दुकान की भाँति सब सामान रखना पड़ता है और रखना पड़ेगा। तभी वह आज के दौर में सफल हो सकता है।

इसी मत का समर्थन करते हुए श्री वामन राव देशपाण्डे ने अपनी पुस्तक इण्डियन म्यूजिकल ट्रेडिशन्स में लिखा है कि "No gharana can escape its natural limitations. A singer pledging him to one single gharana is likely to develop in one sided manner. If one wants a variety of colours, one must learn from many Gurus."

मूल घराने के अतिरिक्त अन्य घरानों का तबला आत्मसात करने की उपयोगिता व सार्थकता का न केवल आधुनिक पीढ़ी के तबला वादकों ने ही समर्थन किया है अपितु अनेक रूढ़िवादी तथा परम्परावादी तबला–वादकों, लेखकों व समीक्षकों ने भी इसका समर्थन किया है। आधुनिक युग की आ़वश्यकता व लोकरूचि ही मिश्रित घराना शैली का कारण है।

पुराने गुरूओं एवं उस्तादों ने भी बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार तबला–वादन करने की आवश्यकता को स्वीकार किया है। दिल्ली घराने के उस्ताद छम्मा खाँ ने मुझे एक साक्षात्कार में बताया था कि ''पहले चारदीवारी में ही गाना बजाना होता था। आज दुनियाँ भर का आदमी गाना बजाना सुनने हॉल में आता है, टिकिट खरीदता है। उसमें हर तबियत व हर किस्म के लोग होते हैं और तबले वाले को भी हर किस्म व अलग–अलग तबियत के कलाकारों के साथ बजाना पड़ता है। तो दुकानदारी उसकी चलेगी जो हर किस्म का सामान रखता है। इस तरह तबले के आज के दौर में सब घरानों का तबला मिक्स करके बज रहा है। इसमें लोगों को मजा आने लगा। तबले में चमक पैदा हुई। आदमी जो वक्त के हिसाब से न चले वो इंसान नहीं। लोग कहेंगे पुराने लोग हैं।''

वर्तमान युग की बदलती परिस्थितियों को देख ''अब गुरू भी उदार हो गये हैं। अब वे अपने मूल घराने के अतिरिक्त अन्य घरानों का ज्ञान भी अपने शिष्यों को देने लगे हैं। वे अब दूसरे घराने का तबला बजाने हेतु प्रतिबन्धित भी नहीं करते। स्वयं उस्ताद जाकिर हुसैन ने एक साक्षात्कार में बताया कि ''पहले जब मैं बनारस घराने की चीजें बजाया करता था तो मेरे गुरू (उस्ताद अल्ला रक्खा) नाराज हो जाया करते थे। ये क्या मुसीबत लगा रखी है। लेकिन अब वे नाराज नहीं होते। क्योंकि उनकी भी समझ में आ गया कि दरवाजे खिड़कियाँ बन्द करके बैठना सेहत के लिए मुनासिब नहीं है। कोई अच्छी चीज नजर आये तो उसे अपने अन्दाज मे ठाल लेना चाहिए।''

संगत, विविधता, लोकरूचि के अतिरिक्त मिश्रित घराना शैली का एक और महत्वपूर्ण कारण है, वह है दूरसंचार, श्रवण यन्त्रों की सुलभता एवं संगीत सम्मेलनों की संख्या में निरन्तर वृद्धि। आज प्रत्येक विद्याार्थी व कलाकार आकाशवाणी, दूरदर्शन, सी.डी., डी.वी.डी., यूट्यूब फेसबुक, कार्यक्रमों के माध्यम से प्रत्येक घराने का संगीत सुनता है और यह मानव स्वभाव है कि उसे कोई चीज बंदिश अथवा रचना अच्छी लगेगी तो उसे आत्मसात करने का प्रयास अवश्य करेगा।

अतः तबला–वादन के क्षेत्र में वर्तमान आकर्षक स्वरूप के कारक शिक्षा, परम्परावादी तबला–वादकों की उन्मुक्तता, स्वतंत्रता एवं मिश्रित घराना पद्धति ने इस वाद्य एवं वादकों का सामाजिक व सांगीतिक स्वरूप को विकसित, उन्नयन कर, उसे एक नवीन दिशा प्रदान कर, उसे नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रमुख वाद्य के रूप में स्थापित किया है।

❖◆❖